राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर

आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा (मार्च 2021)

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर संस्कृत (नियमित / स्वाध्यायी)

प्रश्नपत्र - प्रथम

प्रश्नपत्र का नाम - साहित्यशास्त्र

नोट – सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान है। प्रश्नों के उत्तर 500 से 800 शब्दों के बीच लिखिए।

प्रश्न -1. आचार्य भामह द्वारा प्रतिपादित "काव्य-लक्षण" की विवेचना कीजिए।

प्रश्न -2. काव्यप्रकाश के अनुसार "गुणीभूतव्यंग्यकाव्य" के भेदों को प्रतिपादित कीजिए।

प्रश्न -3. काव्यप्रकाश के अनुसार चित्रकाव्य के भेदों को उदाहरण सहित समझाइए।

प्रश्न - 4. आचार्य मम्मट के अनुसार गुणों के भेदों को उदाहरण सहित लिखिए।

प्रश्न - 5. अधोलिखित में से किन्हीं दो अलंकारों को लक्षण व उदाहरण सहित लिखिए –

(क) रूपक अलंकार
(ख) दीपक अलंकार
(ग) उपमा अलंकार

राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर

आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा (मार्च 2021)

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर संस्कृत (नियमित / स्वाध्यायी)

प्रश्नपत्र - द्वितीय

प्रश्नपत्र का नाम - निबन्ध, अनुवाद एवं अपठित गद्य-पद्य

नोट – सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान है। प्रश्नों के उत्तर 500 से 800 शब्दों के बीच लिखिए।

प्रश्न -1. निम्न में से किसी एक विषय पर निबन्ध लिखिए –

क. आचारः परमो धर्मः

ख. महाकविः कालिदासः

ग. श्रीमद्भगवद्गीता

घ. संस्कृतभाषायाः महत्त्वम्

प्रश्न -2. हिन्दी भाषा में अनुवाद कीजिए –

शिक्षाक्षेत्रे संगणकानां बहुविधा उपयोगिता अस्ति। प्रशिक्षणकार्ये, शोधकार्ये, विविधविषयाणां शिक्षणे च संगणकस्य उपयोगो भवति। परीक्षाकार्येषु, परिणामसंगणने, परीक्षापरिणामप्रकाशनादिकार्येषु अस्य उपयोगो भवति। पुस्तकादिप्रकाशनेऽपि अस्य सहायता गृह्यते।

अथवा

व्याक्रियन्ते विविच्यन्ते प्रकृतिप्रत्ययादयो यत्र तद् व्याकरणम्, इति व्युत्पत्तिम् आश्रित्य व्याकरणं शब्दशास्त्रं नाम। व्याकरणे हि प्रकृतिप्रत्ययादीनां सूक्ष्मातिसूक्ष्मं विवेचनं प्रस्तूयते। वेदानां रक्षार्थम्, ऊहार्थम् अर्थात् यथास्थानम् उचितशब्दप्रयोगार्थम्, शास्त्राज्ञापालनार्थम्, असन्देहार्थञ्च व्याकरणाध्ययनम् अनिवार्यम्।

प्रश्न -3. संस्कृत भाषा में अनुवाद कीजिए –

इस संसार में मनुष्य जन्म लेते हैं और मर जाते हैं, परन्तु उनमें कुछ लोग ऐसा व्यवहार करते हैं जिससे वे संसार में परम प्रतिष्ठा को प्राप्त कर लेते हैं। वे वस्तुतः अपने कर्त्तव्य पालन में लगे रहते हैं। कर्त्तव्य का पालन ही धर्म का परिपालन है। हमारे देश में सदैव धर्म की प्रधानता रही है। भारत देश ने धर्म के परिपालन में महती प्रतिष्ठा प्राप्त की थी।

इस समय हम लोग कर्त्तव्य पालन नहीं कर रहे हैं। यही कारण है कि हम लोग वैसी समुन्नति करने में समर्थ नहीं हैं जैसी समुन्नति करनी चाहिए ।

अथवा

किसी भी मनुष्य को कोई कटुवचन न कहना ही मधुरभाषण कहा जाता है। मधुरभाषण वह गुण है जिससे मनुष्य संसार भर को अपने वश में कर सकता है। भाषण में मधुरता के साथ ही सत्य का भी सम्मिश्रण होना चाहिए। मधुर और सत्यवचन ही बोलना चाहिए। ऐसे वचन को सुनृत कहते हैं ।

प्रश्न - 4. व्याख्या कीजिए –

तस्मिन् पर्वते आसीदेको महान् कन्दरः। तस्मिन्नेव महामुनिरेकः समाधौ तिष्ठति स्म। कदा स समाधिमङ्गीकृतवानिति कोऽपि न वेत्ति। ग्रामणी-ग्रामीण-ग्रामाः समागत्य मध्ये मध्ये तं पूजयन्ति प्रणमन्ति स्तुवन्ति च। तं केचित् कपिल इति, अपरे लोमश इति, इतरे जैगीषव्य इति, अन्ये च मार्कण्डेय इति विश्वसन्ति स्म ।

अथवा

हिंसनं हिंसेति । कस्यापि पीडनं दुःखदानं वा हिंसेति कथ्यते। हिंसा त्रिविधा भवति- मनसा, वाचा, कर्मणा च। एतासां तिसृणां हिंसानां परित्यागोऽहिंसेति निगद्यते। अहिंसैव धर्ममार्गः । अतएव भगवान् बुद्धः, भगवान् महावीरः, महात्मगान्धिमहोदयस्य अहिंसायाः स्वापदेशे दत्तवन्तः। महात्मगान्धिमहोदयस्य संरक्षणे अहिंसाशस्त्रेणैव भारतवर्षः स्वतन्त्रतामलभता ।

प्रश्न – 5. व्याख्या कीजिए –

असम्भवं हेममृगस्य जन्म तथापि रामो लुलुभे मृगाय ।
प्रायः समापन्नविपत्तिकाले धियोऽपि पुंसां मलिना भवन्ति ॥

अथवा

उद्यमेन हि सिद्ध्यन्ति कार्याणि न मनोरथैः।
न हि सुप्तस्य सिंहस्य प्रविशन्ति मुखे मृगाः ॥
योजनानां सहस्रं तु शनैर्गच्छेत् पिपीलिका ।
अगच्छन् वैनतेयोऽपि पदमेकं न गच्छति ॥

राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर

आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा (मार्च 2021)

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर संस्कृत (नियमित / स्वाध्यायी)

प्रश्नपत्र - तृतीय

प्रश्नपत्र का नाम - महाकाव्य

नोट – सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान है। प्रश्नों के उत्तर 500 से 800 शब्दों के बीच लिखिए।

प्रश्न -1. निम्न पद्यों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) हरत्यघं सम्प्रति हेतुरेष्यतः शुभस्य पूर्वाचरितैः कृतं शुभैः ।
शरीरभाजां भवदीयदर्शनं व्यनक्ति कालत्रितयेऽपि योग्यताम् ॥

(ख) उपप्लुतं पातुमदो मदोद्धतैस्त्वमेव विश्वम्भर! विश्वमीशिषे ।
ऋते रवेः क्षालयितुं क्षमेत कः क्षपातमस्काण्डमलीमसं नभः ॥

प्रश्न -2. शिशुपालवध के प्रथम सर्ग के आधार पर श्रीकृष्ण का चरित्र-चित्रण कीजिए ।

अथवा

"माघे सन्ति त्रयो गुणाः" इस उक्ति पर प्रकाश डालिए |

प्रश्न- 3. निम्न पद्यों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए –

(क) सममेव समाक्रान्तं द्वयं द्विरदगामिना ।
तेन सिंहासनं पित्र्यमखिलं चारिमण्डलम् ॥

(ख) अप्यग्रणीर्मन्त्रकृतामृषीणां कुशाग्रबुद्धे! कुशली गुरुस्ते ।
यतस्त्वया ज्ञानमशेषमाप्तं लोकेन चैतन्यमिवोष्णरश्मेः ॥

प्रश्न- 4. रघुवंश महाकाव्य के चतुर्थ सर्ग के आधार पर रघु की दिग्विजय का वर्णन कीजिए ।

अथवा

रघुवंश के पंचम सर्ग के अनुसार महाराजा रघु एवं वरतन्तु शिष्य कौत्स के संवाद पर प्रकाश डालिए ।

प्रश्न- 5. महाकाव्यों के स्वरूप को बताते हुए उनकी विकास परम्परा का वर्णन कीजिए ।

राजीव गाँधी शासकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, मन्दसौर

आन्तरिक मूल्यांकन परीक्षा (मार्च 2021)

एम.ए. तृतीय सेमेस्टर संस्कृत (नियमित / स्वाध्यायी)

प्रश्नपत्र - चतुर्थ

प्रश्नपत्र का नाम - नाट्यशास्त्र

नोट – सभी प्रश्न हल करना अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के अंक समान है। प्रश्नों के उत्तर 500 से 800 शब्दों के बीच लिखिए।

प्रश्न -1. भरतमुनि, धनञ्जय एवं अभिनवगुप्त, इन तीन नाट्यशास्त्रीय चिन्तकों का परिचय लिखिए।

प्रश्न -2. नाट्यशास्त्र का महत्त्व बताते हुए त्रिकोण एवं चतुष्कोण नाट्यमण्डपों का सचित्र वर्णन कीजिए।

प्रश्न -3. वृत्तियाँ किसे कहते हैं? भारती, सात्वती एवं कैशिकी वृत्तियों का वर्णन कीजिए।

प्रश्न- 4. नाट्यशास्त्र के द्वितीय एवं षष्ठ अध्याय के 5-5 श्लोकों की सप्रसंग व्याख्या कीजिए।

प्रश्न- 5. दशरूपक के आधार पर मुख्य नायक एवं नायिकाओं का सोदाहरण वर्णन कीजिए।